International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 24-01-2025, Accepted: 25-02-2025, Published: 13-03-2025
Volume 7, Issue 1, 2025, Page No. 3-4

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के काव्यगत विशेषताएँ

डॉ. के. चन्द्रा
आचार्य, हिंदी विभाग, एस टी एस एन सरकारी स्नातक महाविद्यालय, कदिरि, श्री सत्य साई, आन्ध्र प्रदेश, भारत

सारांश
हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल का आरंभ भारतेन्दु हरिहचन्द्र जी से ही माना गया है। हिन्दी पत्रकारिता, नाटक और काव्य के क्षेत्र में उनका बहुमूल्य योगदान रहा है। हिन्दी में नाटकों का प्रारम्भ भारतेन्दु हरिहचन्द्र से माना जाता है। भारतीय नवजागरण के अग्रदूत भारतेन्दु जी ने देश की पराधीनता, गरीबी एवं शासकों के अमानवीय शोषण के चित्रण को ही अपने साहित्य का लक्ष्य बनाया। हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की दिशा में भारतेन्दु जी ने काम किया। अतः आप एक उत्कृष्ट कवि, व्यंग्यकार, सफल नाटककार, जागरूक पत्रकार एवं ओजस्वी गद्यकार थे कि उनका समूचा रचनाकार्य पथप्रदर्शक बन गया।

मूल शब्दः आलोक, जनजीवन, नवजागरण, उद्बोधन, साहित्य–साधना

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की प्रतिभा सर्वतोन्मुखी है। हिंदी भाषा से भारतेन्दु जी को अनन्य प्रेम रहा था। आप हिन्दी साहित्य गगन के इन्दु माने जाते हैं। भारतेन्दु जी ने हिंदी साहित्य जगत को वह आलोक दिया कि हिंदी जगत अनन्त काल तक जगमगाता रहेगा। इन्होने अपना पूरा जीवन साहित्य–साधना में अर्पित किया। आप ने युग की आवश्यकता और जनरुचि को ध्यान में रखकर अनेक प्रकार की साहित्य रचना की है। उनके काव्यों में भावपक्ष एवं कलापक्ष, दोनों ही दृष्टि से उनका उच्चकोटी का माना गया है। भारतेन्दु जी ने परम्परा से चले आ रहे दोहा, कवित्त, छंदों, छप्पय आदि के साथ–साथ लावनी और कजली एवं लोकछ्न्दो को भी महत्व दिया। उन्होने ब्रजभाषा और खड़ीबोली दोनों का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया। भारतेन्दु जी ने हिंदी को दरबार से निकालकर, उसे राष्ट्रीय जीवन एवं जनजीवन के निकट पहुंचाने का प्रयास किया। हिंदी भाषा की महत्ता स्थापित करते हुए भारतेन्दु जी कहते है कि–

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय का शूल।।

भारतेन्दु जी ने अतीत को वर्तमान से जोड़ने का प्रयास किया। प्राचीनता के साथ नवीनता का समन्वय करना भारतेन्दु दृ साहित्य की विशेषता रही है। उनके काव्य में मुख्य रूप से निम्नलिखित रूप से देखते हैं–
भावपक्ष रू भारतेन्दु जी के हृदय अपने देश यानि राष्ट्र के प्रति असीम प्रेम और श्रद्धा थी। भारतवर्ष का गौरवगान करते हुए वे अपने "भारत दुर्दशा" नाटक में कहते हैं–

"भारत के भुजबल जग रच्छित, भारत विद्या जेहि जन सिंचित।
भारत तेज जगत विस्तारा, भारत–भय कंपित संसारा।।
आबहु सब मिलि रोवहू भारत भाई।
हा; हा; भारत दुर्दशा न देखी जाई।।

भारतेन्दु जी ने अपने काव्य में भारत की अधोगति जैसे सामाजिक कुरीतियाँ, जाति भेद–भाव, धर्माडंबर, धनिकों की स्वार्थलोलोपता, सरकारी कर्मचारियों की लूट–खसोट आदि का भी चित्रण करते हुए लिखते है–

"बैर फूट भयो, सब भारत को ही सो नास।
तबहुन न छाड़त माहि सब बंधे मोह के फांस।।
भीतर भीतर सब रस चूसे, बाहर के तन–मन धन लूटे।
जाहिर बातन में अति तेज, क्यों सखि जन ? नहिं अंगरेज।।

भारतेन्दु युगीन कविता में सांप्रत समाज की दशा का, विदेशी सभ्यता के संकट का, पुराने रोजगार के बहिष्कार का स्वर दिखाई देता है। इस युग में दो विचार धाराएँ प्रकट होती है–
पहला पुरानवादी संप्रदाय के समर्थकों की और दूसरा आधुनिकता के व्यापक दृष्टि वालों की। परंतु भारतेन्दु जी ने अपना एक मध्यम मार्ग को अपनाया था। उन्होने सामाजिक दोषों, रुडियों, कुरीतियन क घोर विरोध किया। छुआछूत के प्रचार के प्रति एवं धर्म के नाम पर होने वाले ढोंग के प्रति स्वर भारतेन्दु जी ने अपने काव्य को माध्यम बनाया।

विषय की नवीनता

भारतेन्दु जी ने शृंगार के दोनों पक्षों बहुत स्वाभाविकता से वर्णन किया है। वे भक्तिकालीन साहित्य से बहुत प्रभावित हुए थे। पहली बार रीतिकालिन शृंगारिक भावना का विरोध कर, देशप्रेम और समाजसुधार की भावना को अपने काव्य का विषय बनाने वाले भारतेन्दु जी ही पहले व्यक्ति थे । नवजागरन एवं अछूतोद्धार की भावना भी उनके काव्य में हम देख सकते है। समस्या पूर्ति इस युग की काव्य–शैली थी और इस युग के अंतिम दिनों में खड़ीबोली में कविता करने का आंदोलन प्रारंभ हो गया था। भारतेन्दु जी की खड़ीबोली का एक उदाहरण

साँझ सबेरे पंछी सब क्या कहते हैं कुछ तेरा है।

कलापक्ष–
भारतेन्दु जी ने काव्य की भाषा प्रधानतरू ब्रजभाषा ही रही। परंतु ब्रजभाषा के अप्रचलित शब्दों को छोड़कर उसके व्यवहारोपयोगी रूप को अपनाया। उनके ब्रजभाषा में जहां तहां उर्दू और अँग्रेजी प्रचलित शब्दों और मुहावरों के प्रयोग से भाषा में प्रभाव एवं चमत्कार उत्पन्न हो गया। इस तरह उनकी भाषा सरल और व्यावहारिक है। भरतेन्दु जी ने प्रचलित सभी छंदों को अपनाया। उनके काव्य में संस्कृत के बसंत तिलका,शार्दूल आदि हिंदी के चौपाई, रोला,सोरठा, कुंडलियाँ कवित आदि उर्दू के रेख़ता, गजल छंदों का प्रयोग हुआ है। अलंकारों का प्रयोग भरतेन्दु जी के काव्य में सहज रूप से हुआ है।

शैली– अपनी काव्य रचना में भरतेन्दु जी ने चार प्रकार की शैली अपनाई है जो निम्नलिखित है–

भावात्मक शैली–
भरतेन्दु जी ने हिन्दी साहित्य के आयाम को नयी दिशा दी। अपनी भावना व्यक्त करने के लिए नाटकों एवं व्यंग्यों को बेहतरीन इस्तेमाल किया। उनके प्रेम और भक्ति के पदों में इस शैली का प्रयोग मिलता है जिसमें दोहा, कवित्त और सवैया छंदों का अधिक प्रयोग हुआ है।

तरणि तनुजा तट तमाल तरुवर बहू छाए।
झुके कूल सों जल परसन हित मनहु सुहाए।।

अलंकृत–शैली –
भारतेन्दु जी ने अपनी शृंगारिक कविताओं में रीतिकालीन पूर्व प्रचलित शैली का प्रयोग किया है जिसमें उपमा, रूपक, आदि अर्थालंकारों के साथ शब्दालंकारों द्वारा भाष की सजावट पर भी ध्यान दिया है। भारतेन्दु जी ने शृंगार के दोनों ही पक्ष संयोग और वियोग का सुंदर चित्रण किया है। किन्तु उनमें कहीं भी कामुकता या वासना का रंग दिखाई नहीं पड़ता। जैसे उनके वियोगवस्था का चित्रण इस प्रकार है–

देख्यो एक बाराहून न नैन भरि तोहि याते, जौन जौन लोक जैहे तही पछतायगी।
बिना प्रान प्यारे भए दरसे तिहारे हाय, देखि लीजो आँखें ये खुली ही रह जायेगी ।।

भारतेन्दु जी के कविताओ में भक्ति एवं शृगार और प्रेम वर्णन भी प्रकट होता है जैसे –

ब्रज के लता पता मोहि कीजे।
गोपी पद पंकज पावन कि रव जायें सिरे घीजे।।

व्यंग्यात्मक शैली
यह शैली मुहावरेदार भाषा है जो अभिव्यंजना दृशक्ति से पूरित है। इस शैली का प्रयोग समाज सुधार संबंधी कविताओं में हुआ है । सामाजिक कुरीतियों और अंधविश्वासों एवं पाश्चात्य संस्कृति पीआर तीव्र व्यंग्य किए गए। उन्होने अपने समय की विभिन्न बुराइयों पर व्यंग्य इस तरह प्रस्तुत करते हैं –

भीतर भीतर सब रस चूसे, हंसि दृहंसि के तन–मन–धन मूसे।
जाहिर बातन में अति तेज, क्यों सखि सज्जन नहिं अंगरेज।।
इनकी उनकी खिदमत करो, रुपया देते–देते मरो।
तब आवे मोहि कारण खराब, क्यों सखि सज्जन नहिं खिताब।।

उद्बोधन – शैली – उद्बोधन शैली का प्रयोग देशप्रेम कविताओं में किया गया, जो कि सरल भाषा में जन – जागरण का संदेशा भी दिया गया है। भारत के प्राचीन गौरव की झलक को वे इस तरह प्रस्तुत करते है–

भारत के भुज बल जग रच्छित, भारत विद्या लहि जग सिच्छित।
भारत तेज जगत विस्तारा, भारत भी कंपित संसारा।।

भारतेन्दु जी में देशप्रेम की भावना कूट कूटकर भरी हुई है। देशवासियों के मन में स्वराज्य की भावना जगाई। पराधीन भारत को जगाना चाहते थे और अंग्रेजों की कूटनीति का पर्दाफाश करते हुए एवं राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रेत भारत की दुर्दशा में इनका देशप्रेम इस प्रकार है–

सत्रु सत्रु लड़वाई दूर रहि लखिय तमाशा।
प्रबल देखिए जाहि जाहि मिलि दीजे आसा।।
हरिहचन्द जू हीरन को व्यवहार कै कांचन को लै परेखिए का।
जिन आंखिन में तुव रूप बस्यो, उन आंखिन सों अब देखिए का।।

भारतेन्दु जी देश कि दयनीय दशा से उत्पन्न क्षोभ के कर्ण ईश्वर से प्रार्थना इस तरह करते है–

कहाँ करुणानिधि केशव सोए ?
जानत नाहिं अनेक जतन करि भारतवासी रोए।

भारतेन्दु जी हिन्दी में नवजागरन का संदेश लेकर अवतरित हुए। भाषा, भाव एवं शैली में मौलिकता और नवीनता के संयोग कर इनको आधुनिक काल के अनुरूप बनाया। हिन्दी के नाटकों का भी सूत्रपात इन्हीं के द्वारा हुआ। इस कारण उनको आधुनिक हिन्दी का जन्मदाता माना जाता हैं। भारतेन्दु जी बहुमुखी प्रतिभाशाली थे। कविता, नाटक, उपन्यास, निबंध आदि सभी तरह के क्षेत्रों में उनकी अपूर्व देन है। भारतेन्दु जी के द्वारा कितने ही प्रतिभाशाली लेखकों को जन्म मिला। मातृभाषा की सेवा में उन्होने अपना पूरा धन एवं जीवन समर्पित कर दिया। इन्हीं विशेषताओं के कारण भारतेन्दु जी हिन्दी के साहित्याकाश में एक दैदीप्यमान नक्षत्र बन गए। अपने जीवनकाल में ही उन्होने हिन्दी साहित्य को समृद्ध केआर दिया। और उनका यह युग भारतेन्दु युग के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

संदर्भ सूची–
1. भारतेन्दु हरिहचन्द्र– नामवर सिंह
2. अंधेर नागरी– भारतेन्दु हरिहचन्द्र
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास– डॉ नगेन्द्र
4. आधुनिक कवि– विश्वम्बर 'मानव' रामकिशोर शर्मा
5. हिन्दी साहित्य कोश– डॉ डीरेन्द्र वर्मा
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल